विराट वैभव
नई दिल्ली, रविवार, 01 जून 2025

साहित्य चर्चा

साहित्यिक परंपराओं की विविधता में भारतीयता की झलक महसूस होती है: राष्ट्रपति मुर्मू

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि साहित्यिक परंपराओं की विविधता में भारतीयता की झलक महसूस की जाती है। दो दिवसीय साहित्यिक सम्मेलन को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि लगभग 140 करोड़ देशवासियों के बड़े परिवार में कई भाषाएं, अनेक बोलियां और साहित्यिक परंपराओं की असीम विविधता है। मुर्मू ने कहा, लेकिन इस विविधता में भारतीयता की झलक महसूस की जाती है। भारतीयता की यह भावना हमारे देश के सामूहिक अवचेतन में भी गहराई से समाई हुई है। मैं देश की सभी भाषाओं और बोलियों को अपनी भाषा और बोली मानती हूं। राष्ट्रपति ने कहा कि वह देश की सभी भाषाओं और बोलियों को अपनी भाषा और बोली तथा सभी भाषाओं के साहित्य को अपना मानती हैं। मुर्मू यहां राष्ट्रपति भवन सांस्कृतिक केंद्र में आयोजित सम्मेलन कितना बदल चुका है साहित्य? का उद्घाटन करने के बाद बोल रही थीं। इस अवसर पर राष्ट्रपति ने कहा कि विद्यार्थी जीवन से ही उनके मन में साहित्य और साहित्यकारों के प्रति सम्मान और कृतज्ञता की भावना रही है। उन्होंने कहा, समय के साथ साहित्य के प्रति विशेष सम्मान की यह भावना और भी गहरी होती गई है। उन्होंने इस सम्मेलन के आयोजन के लिए संस्कृति मंत्रालय और साहित्य अकादमी की सराहना की। राष्ट्रपति ने कहा कि बदलते संदर्भों के बीच स्थाई मानवीय मूल्यों की स्थापना ही कालजयी साहित्य की पहचान है। मुर्मू ने कहा, जैसे-जैसे समाज और सामाजिक संस्थाएं बदलती हैं, चुनौतियां और प्राथमिकताएं बदलती हैं, साहित्य में भी बदलाव देखने को मिलते हैं। लेकिन साहित्य में कुछ ऐसा है जो सदियों बाद भी प्रासंगिक बना हुआ है। स्नेह और करुणा के साहित्यिक संदर्भ बदलते रहते हैं लेकिन उनकी भावनात्मक पृष्ठभूमि नहीं बदलती। साहित्य से प्रेरणा लेकर मनुष्य सपने देखता है और उन्हें साकार करता है। राष्ट्रपति ने कहा कि आज का साहित्य उपदेशात्मक नहीं हो सकता। उन्होंने कहा, आज का साहित्य उपदेशात्मक नहीं हो सकता। आज का साहित्य नैतिकता की किताब नहीं हो सकता। आज का लेखक एक सहयात्री की तरह चलता है, देखता है और दिखाता है। अनुभव करता है और दूसरों को अनुभव कराता है।

साहित्य सम्मेलन में लेखिकाओं ने भारत का नारीवादी साहित्य पर अपने विचार रखे

राष्ट्रपति भवन सांस्कृतिक केंद्र में साहित्य अकादमी के साहित्यिक सम्मेलन में प्रख्यात लेखिकाओं और विद्वानों ने भारत का नारीवादी साहित्य : नई पृष्ठभूमि विषय पर चर्चा की। ओड़िया लेखिका प्रतिभा रे, के नेतृत्व वाले सत्र में लेखिका अनामिका, अनुजा चंद्रमौली, महुआ माजी, निधि कुलपति, प्रीति शेनॉय और तमिझाची थंगापांडियन ने भाग लिया। तमिल लेखिका व दक्षिण चेन्नई से लोकसभा सांसद थंगापांडियन ने क्षेत्रीय नारीवाद पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता को रेखांकित किया। उन्होंने साथ ही महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाली पश्चिमी नारीवादी हस्तियों की सराहना की। थंगापांडियन ने कहा, आप सिर्फ पश्चिमी नारीवाद को अपनाकर उसे क्षेत्रीय नारीवाद के तौर पर स्थापित नहीं कर सकते। मैंने हमेशा क्षेत्रीय नारीवाद की वकालत की है, क्योंकि हमारे यहां जाति की एक बहुत ही अजीब समस्या है, जो पश्चिमी लोगों के पूरी तरह समझ में आने वाली नहीं है। उन्होंने कहा, बेशक हमने हमेशा उन सभी नारीवादियों की प्रशंसा की है जिन्होंने हमारे हर अधिकार के लिए लड़ाई लड़ी है। हम उनकी प्रशंसा करते हैं और उनसे हमें सभी बुनियादी सिद्धांत मिलते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि नारीवाद का मूल सिद्धांत अब भी ग्रामीण लोकगाथाओं और मेरी नानी के जीवन अनुभवों में मौजूद है। अंग्रेजी लेखिका अनुजा चंद्रमौली ने कहा, दुनिया के कई हिस्सों में नारीवाद को आज भी बुरा शब्द माना जाता है और 2025 में भी हमें यह स्पष्ट करना होगा कि नारीवाद मानवतावाद है। यह हमेशा सभी के लिए समान अधिकारों के बारे में था, यह किसी एक लिंग को अनुचित लाभ देने के बारे में नहीं है। हिंदी लेखिका और सांसद महुआ माजी ने हिंदी साहित्य में महिलाओं की अभिव्यक्तिवादी और रचनात्मक लेखन को रेखांकित किया। उन्होंने नारीवाद के प्रमुख पहलुओं पर प्रकाश डाला। वहीं हिंदी कवि और लेखिका अनामिका ने कहा कि भारतीय नारीवादी साहित्य सीमाओं का विस्तार कर रहा है और स्त्रियों को फिर से परिभाषित कर रहा है। अंग्रेजी लेखिका प्रीति शेनॉय ने कहा कि लेखन के माध्यम से, महिलाएं अपनी शक्ति पुनः प्राप्त करती है, एक शांत क्रांति को जन्म देती है जो हर शब्द और हर आवाज के साथ प्रकट होती है।